# आपके पत्र

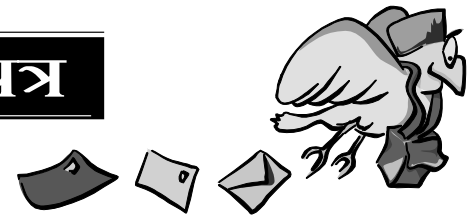

***संपादक महोदय,***

मैं आपकी मधुवाणी का नियमित (वार्षिक) सदस्य हूँ। अपनी स्वरचित एक कविता प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ।

## मधुमेह–गीत

*उठो सवेरे शौच आदि कर,*
*दूर टहलने जाया करो।*
*करतल ध्वनिकर ऊँचे सुर में,*
*गीत मनोहर गाया करो।*
*भूख लगे जब असहनीय,*
*तब मिस्सी रोटी खाया करो।*
*मौसम हो या बे मौसम ही,*
*रस करैला पिया करो।*
*बात हँसी की थोड़ी सी हो,*
*अट्टहास कर हँसा करो।*
*गर भावे तो*
*चीनी, चावल, चिकनाई से दूर रहो।*
*चिन्ता जग में किसे नहीं है,*
*तुम क्यों चिन्ता करते हो।*
*अगर कहीं कुछ कर सकते हो,*
*निश्चिंत होकर रहा करो।*
*नियमित रहकर समय–समय पर,*
*डॉक्टर जी से मिला करो।*
*अपने मधुमेह के डाक्टर की सलाह,*
*''अनन्त'' की तरह सदा लिया करो।*

**– अनन्त राय**
मीरापुर, इलाहाबाद

***संपादक महोदय,***

जुलाई अगस्त अंक में आपने दीर्घायु बाल मधुमेही शीर्षक से संपादकीय लिखा है। लेकिन पूरे अंक में कहीं भी बाल मधुमेह रोगियों की चर्चा नहीं हैं। पूर्व में कुछ बाल मधुमेहियों के संस्मरण छपे थे वे भी आपने बंद कर दिये। मैं 24 वर्ष का बी.कॉम का विद्यार्थी हूँ तथा सन् 1996 से मधुमेही हूँ। कृपया हर अंक में हम बाल मधुमेहियों के लिये कोई न कोई सामग्री अवश्य शामिल किया कीजिये। वैसे मैं बालक तो नहीं रहा पर बाल मधुमेही तो हू हीं।

**– अक्षय भारद्वाज,** वर्धा

***संपादक जी,***

मधुमेह वाणी में हर अंक का हर लेख उत्तम होता है। हर अंक में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के लेख का बेसब्री से इंतजार रहता है। इस बार अफसर की डायबिटिज़ में तो उन्होंने लेखनी का जादू भरा तीर चलाया है। अरूण शकरगायें का डायबिटीज़ का नामोनिशान मिटा दूँगा, एक सच्ची घटना एक आप बीती जैसा लगा। डॉ. सुभाष शर्मा की रचना 'पीटर और मेरा नोबल प्राइज़' भी अच्छी लगी। अन्य वैज्ञानिक लेख तो जानकारी का खजाना हैं।

**– गुलरेज़ मो.,** राजा की मंडी, आगरा

***संपादक महोदय,***

मैं स्वयं एक डाक्टर हूँ। कंधे के दर्द के कई मरीज देखती रही हूँ और उन्हें चिकित्सा परामर्श भी देती रही हूँ। उनमें से कई मधुमेह रोगी भी रहे हैं लेकिन इनका आपस में इतना गहरा संबंध हैं यह बात डॉ. सुशील जिंदल का लेख पढ़कर ही मालूम हुई। मैं स्वयं मधुमेही हूँ और उक्त लेख पढ़कर सावधान हो गयी हूँ। अन्य सारे लेख भी बड़े रूचिकर ढंग से लिखे गये हैं।

**– डॉ. स्मिता जोशी,** नागपुर

*संपादक महोदय,*

जुलाई, अगस्त 2005 **मधुमेह वाणी** का अंक प्राप्त हुआ। आपको धन्यवाद। इस पत्रिका का हर अंक अत्यन्त ज्ञानवर्धक होता है कि उसकी जितनी अधिक प्रशंसा की जाए कम है। वास्तव में हर लेख की प्रस्तुति अत्याधिक प्रशंसनीय रहती है। वैज्ञानिक विषयों पर लेख आप द्वारा जो प्रस्तुत किये जाते है वह भी अत्यधिक लाभकारी हैं। अफसर की डायबिटीज पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। लेखक ने वास्तविकता को भली–भांति प्रस्तुत किया है इसके लिए उनको धन्यवाद देता हूँ। मधुमेह प्रश्नोत्तरी एक सफल प्रयास मधुमेह के रोगियों के लिए है। मेरे विचार से यदि आप अगले अंक में मधुमेह रोगियों की सेक्स से सम्बंधी समस्या पर कोई लेख लिखे तो आज के संदर्भ में बहुत उचित होगा। लोग सभी समस्याओं की चर्चा तो कर लेते हैं, किन्तु सेक्स से होने वाली आम परेशानी जो मधुमेह का कारण होती है या हो सकती है उसका उल्लेख कम होता है। विशेष रूप से पुरूषों में होने वाली समस्या का कृपया अवश्य किसी विशेषज्ञ द्वारा लेख प्रस्तुत करें।

**– एम.वाई. खान,** स्टेनली रोड, इलाहाबाद

*संपादक महोदय,*

मधुमेह वाणी का हर अंक बड़े चाव से पढ़ती हूँ तथा सहेज कर रखती हूँ। सीधी–सरल भाषा मे इतनी सारी जानकारी हर मधुमेही के लिये एक वरदान है। जुलाई–अगस्त के अंक में व्यथा एक पाँव की बड़ा ही ज्ञानवर्धक रहा। डॉ. गणेश अरुण जोशी का जूतों के बारे में विस्तार से विवरण बहुत अच्छा है। भविष्य में सैंडिल खरीदते वक्त उन सभी बिंदुओं का ख्याल रखूँगी। 'मधुमेही जलेबियाँ' शीर्षक से कविता अच्छी लगी।

**– वंदना शर्मा,** होशंगाबाद

*संपादक महोदय,*

मधुमेह वाणी में सलाह तो खूब मिलती है। पाठकों के समस्याओं को अधिक स्थान मिले तो उत्तम होगा।

**– श्रीधर बी. पटेल,** सूरत

*संपादक जी,*

**मधुमेह वाणी** का प्रकाशन कर एक महान कार्य किया है आपने। हम मधुमेह रोगियों को अवश्य ही यह पत्रिका पढ़ना चाहिये।

**मधुमेह वाणी** पत्रिका से जो भी मधुमेही रोगियों की समस्या है, उसका समाधान प्राप्त हो जाता है। कई बार हम डॉक्टर से भी नहीं पूछ पाते उसके सम्बंध में हमें जानकारी प्राप्त हो जाती है।

मैं स्वयं भी मधुमेह पीड़ित रोगी हूँ एवं मैंने कई पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ पढ़ी हैं, परन्तु **मधुमेह वाणी** से अच्छी एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका नहीं पढ़ी जिसमें की रोग के संबंध में, आहार के संबंध में तथा दवाई एवं जाँच के संबंध में इतनी जानकारी है। राधिका श्रीवास्तव के लेख एवं डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेख भी बहुत ही सार गर्भित हैं।

इस पत्रिका को पढ़ने के बाद इन्सुलिन लेने वाले रोगी इस बीमारी से नहीं घबरायेंगे। मैं तो ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह पत्रिका निरंतर उन्नति करे एवं शासन से निवेदन करता हूँ कि मधुमेह रोगियों की दवाई एवं उपचार के लिए अधिक–से–अधिक सबसिडी देने की कृपा करे एवं संपादक जी से प्रार्थना करता हूँ कि इस संबंध में प्रयास करें तो अति उत्तम होगा।

*धन्यवाद*

**– बलराज सिंह सिसोदिया**
ग्राम महोड़िया, जिला–सीहोर (म.प्र.)

*संपादक महोदय,*

जुलाई अगस्त अंक पढ़ा। अब तक हमें एक या दो स्वीटनर्स का पता था। इस अंक में आपने इतने सारे स्वीटनर्स के बारे में बताया तथा हमारा ज्ञान वर्धन किया इसके लिये धन्यवाद। वृद्धावस्था में मधुमेह को अलग दृष्टि से देखना पड़ता है। सचमुच मधुमेही या गैर मधुमेही हर वृद्ध की देखभाल के लिये, समर्पित सजग, संवेदनशील एवं युवा परिजनों की कितनी अधिक जरूरत है यह बात सुभाष शर्मा जी ने बड़े ही स्पष्ट तौर पर बता दी है। उत्तम गुणवत्ता की पत्रिका निकालने के लिये हमारा आभार स्वीकार करें।

**– माया चटर्जी,** चार इमली, भोपाल